व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

वर्ष : 21 अंक : 81 अक्टूबर-दिसंबर-2024

इक्कीसवीं सदी- इक्कीसवें वर्ष में दस्तक

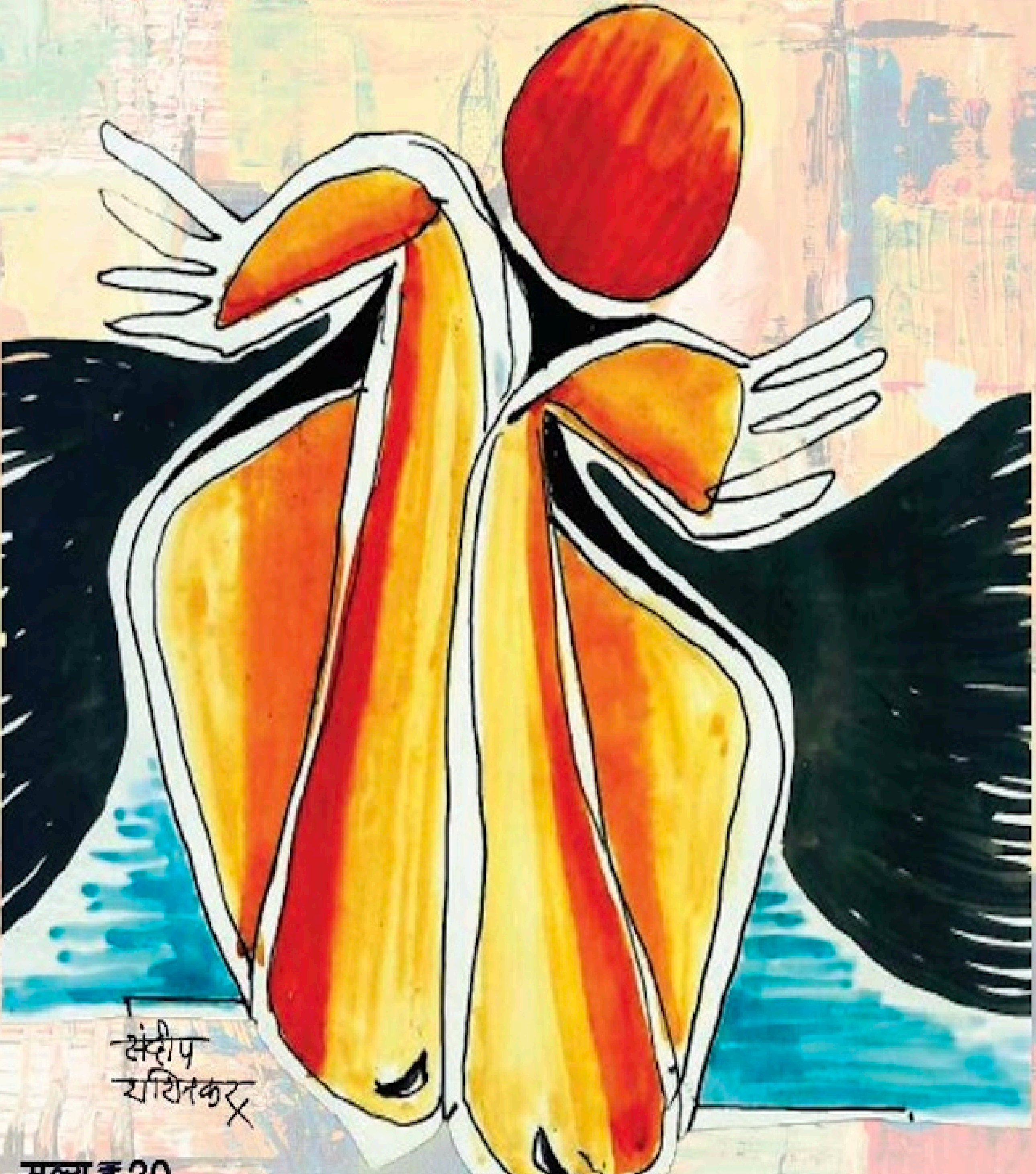

मूल्य ₹ 20

'तीसरा हंस साहित्योत्सव' कुछ छवियाँ

परसाई जन्मशति पर जबलपुर में संगीत श्रोता समाज, प्रगतिशील लेक संघ विवेचना, व्यंग्यम, दुर्ग में साहित्य अकादेमी और दिल्ली में हिंदी अकादेमी के आयोजन की कुछ छवियां। अनूप मणि त्रिपाठी को परसाई सम्मान।

ममता कालिया को उदयराज सिंह स्मृति पुरस्कारं। अशोक कुमार सिन्हा, रामकिशोर उपाध्याय और अलका सिन्हा को 'नई धारा रचना सम्मानं। यश मालवीय को सार्थक साहित्य सम्मान। दामोदर खड़से मध्यप्रदेश सरकार के राष्ट्रीय हिंदी सेवा सम्मान से सम्मनित।

खालसा कॉलेज दिल्ली में रामदरश मिश्र की जन्मशति, हरियाणा लेखक मंच का साहित्य सम्मेलन ।

दिल्ली में 'व्यंग्य लोक' का लोकार्पण। 'व्यंग्य यात्रा' का– 'व्यंग्यम' जबलपुर, प्रेसीडेंसी यूनिवर्सिटी कोलकत्ता एवं चित्र नगरी संवाद मुंबई में लोकार्पण।

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की

रचनात्मक त्रैमासिकी

अक्टूबर-दिसंबर-2024

वर्ष-21 **अंक-81**

एक अंक : 20 रुपए
पांच अंक : सौ रुपए

डिजिटल रूप में NotNul पर उपलब्ध

neelabhsrivastav@gmail.com

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक

प्रेम जनमेजय

73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063

फोन : 011-470233944
मोबाइल : +91-9811154440

ई-मेल-
yatravyangya2004@gmail.com
premjanmejai@gmail.com

आवरण : संदीप राशिनकर की कलाकृति पर आधारित

रेखाचित्र : संदीप राशिनकर

कानूनी सलाहकार (अवैतनिक)
एडवोकेट कुलदीप आहूजा
उच्च न्यायालय

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री

मोबाइल : + 91-9911077754
+ 91-8920111592

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ- 1-3

चंदन घिसें- 4-6

पाथेय- 7-12
बंग महिला- चंद्रदेव से मेरी बातें' 7
रवीन्द्र कालिया- घूस एक चिकनाई है 9
गोपलप्रसाद व्यास- व्यंग्य कोई कांटा नहीं 10
दिनकर सोनवलका- पेंशनर 10
शंकर पुणतांबेकर- चित्र 11

चिंतन 13-32
रमेश सैनी- साहित्य और समाज का संबंध... 13
सेवाराम त्रिपाठी- हिन्दी व्यंग्य नोबेल पुरस्कार की सीढ़ी पर 18
ओमकार बैनजी- ...1984 : सार्थक व्यंग्य की श्रेष्ठ कृति 20
गिरिराजशरण अग्रवाल- काका हाथरसी के काव्य में व्यंग्य 23
मुकेश असीमित- थोक व्यंग्य लेखन 27
संजीव कुमार- व्यंग्य लेखक का व्यक्तित्व 29

संवाद 31-36
रामदरश मिश्र से प्रेम जनमेजय और राणविजय राव का संवाद

त्रिकोणीय 37-50
कैलाश मंडेलकर का परिचय 37
प्रेम जनमेजय- आत्मुग्धता से परे कैलाश 38
कैलाश मण्डलेकर- उन दिनों हम... 39
कैलाश मंडलेकर- कॉलोनी के दन्त चिकित्सक 41
सवांद- अरुण सातले और शैलेन्द्र शरण से 43
ज्ञान चतुर्वेदी- इस ग्रह का और पराये का भी 45
अजातशत्रु- कैलाश मंडलेकर का व्यंग्यबोध 47
जवाहर चौधरी- धापू पनाला में मंडलेकर 49
राहुल देव की टिप्पणी 50

व्यंग्य रचनाएं 51-105
ज्ञान चतुर्वेदी- विष यह राजनीति 51
श्रवण कुमार उर्मलिया- नि:स्वार्थ सेवा महाठगिनी 56
राकेश अचल- सपनों में सत्ता-सुंदरी 58
हरिशंकर राढ़ी- बलात्कार घाटी की सभ्यता 59
मुकेश वर्मा- जाति के खिलाफ जातिवाद 61
रामशरण जोशी- योग्यता 62
सुधा कुमारी- योग्यता 64
श्रीकांत चोधरी- लघु व्यंग्य 65
रामस्वरूप दीक्षित भले- आदमी 67
प्रज्ञा- काना प्लॉट 68
अरविंद विद्रोही- लोकतंत्र की चोखा-चटनी 76
मंगत बादल- कलियुग केवल नाम 77
अर्चना चतुर्वेदी- नारद जी मुस्कुराये 79
समीक्षा तैलंग- ...कमेटी के नाम पत्र 81
भँवरलाल जाट- आखिर चूक कहाँ हो 83
कमलेश भारतीय- लघु व्यंग्य 85
अर्जुन चाव्हाण- लघु व्यंग्य 86
किशोर अग्रवाल- संवेदनाविहीन श्रद्धांजलि 87
पंकज साहा- तीन दीवाने 88
ऋषभ जैन- तलैया वार्ड के गमला चोर 89
राजेश ओझा- गुरु पुष्प नक्षत्र 90
लोक सेतिया- विष्णुलोक का टीवी चैनेल 91
प्रभात गोस्वामी- कॉन्स्टेबल का प्रेम-पत्र 93
संतोष श्रीवास्तव- पद्मश्री 94
संदीप अवस्थी- मूड़ नहीं है 95
रामविलास जांगिड़- सौ टका मोहब्बतिया मार्केट 97
अदिति भदौरिया- इज्जत मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है 98
आत्माराम यादव पीव- पलटासन योग... 99
अखिलेश श्रीवास्तव- चमन एक कुत्ते का चिंतन 100
दिनेश गंगराड़े- सभापति महाशय 101
एकता शर्मा- भुखमरी का चांद बढ़ रहा है 102
अनीता श्रीवास्तव- समोसा एडवाइज 103
मेहेर प्रकाश उपाध्याय- दुधमुहे... 104
मृदुला श्रीवास्तव- बॉस की सर्विसिंग 105

पद्य व्यंग्य- 106-112
नरेश शांडिल्य के दोहे 106
गुरविंदर बांगा की ग़ज़लें 106
ओम निश्चल-सुनो बधिर साधो! 107
गंगाधर चाटे- सरकार किसी की नहीं होती 108
शशिकला त्रिपाठी की प्रखर काव्याभिव्यक्तियां 110
राजमणि- परिवर्तन का फंडा... 111
अजय जनमेजय- ग़ज़लें 111
शिवानंद सिंह 'सहयोगी' की प्रखर काव्याभिव्यक्तियां 112

इधर जो मैंने पढ़ा- 113-121
दीपक गिरकर- पंकज सुबीर की अविस्मरणीय कहानियाँ 113
प्रेम जनमेजय- निर्बीज का बीजत्व 115
राजेश्वर वशिष्ठ- व्यंग्य लोक का प्रवेशांक 116
अजय अनुरागी- व्यंजना के विविध फलक 117
राजशेखर चौबे- नया राजा नये किस्से 117
हरीशकुमार सिंह- दिमाग का दही 118
प्रमोद ताम्बट- चोर मचाए शोर 119
नीलम कुलश्रेष्ठ- बारुदी विस्फोटों से उजड़ते नगर 120

इधर प्राप्त कुछ किताबें और पत्रिकाएं- 121

समाचार- 122-128

अब आप

आर.टी.जी.एस.

द्वारा

'व्यंग्य यात्रा' को अपना आर्थिक सहयोग दे सकते हैं।

खाताधारक का नाम : व्यंग्य यात्रा
बैंक का नाम : केनेरा बैंक
शाखा- पश्चिम विहार, ए-ब्लाक
खाता संख्या : 3223201000092
IFSC Code : CNRB0003223

आरंभ

हिंदी व्यंग्य का संक्रमण काल

व्यंग्य एक संक्रमण काल से गुजर रहा है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अपने शिशु कदमों के साथ प्रवेश करने वाली पीढ़ी आज बुजुर्ग हो गई है। इक्कीसवीं शताब्दी के आरंभ में व्यंग्य लेखन में कदम रखने वाला शिशु व्यंग्यकार आज युवा हो गया है। यह पीढ़ी अपने समय में, डिजिटल प्रभावों के कारण, तेजी से बदलते समय की विसंगतियों से मुठभेड़ कर रही है। जो अग्रज पीढ़ी अपने समय के युवा स्वर को नहीं पहचानती है, उसे स्पेस नहीं देती है वह दंभी है और अपने समय के साथ न्याय नहीं करती है। समाज की प्रगति तभी सही मार्ग पर गतिशील हो पाती है जब उसमें अतीत और वर्तमान का संतुलन होता है। यही संतुलन एक सकारात्मक, उन्नत एवं गतिशील समाज का निर्माण करता है। युवा पीढ़ी के टूल बदले हैं। कहीं परंपरा का पालन है तो कहीं परिवर्तन की लहर। आवश्यक है कि इस संक्रमण काल में हिंदी व्यंग्य की पुर्नपहचान की जाए। आवश्यक है बदलते समय की करवट पर विमर्श हो। दिशा और दशा पर चर्चा हो। तकनीक की आंधी में चुंधियाई आंखों की दृष्टि को पढ़ा जाए। निश्चित ही यह नया विषय है होगा। नए विषय पर चर्चा 'व्यंग्य यात्रा' की प्राथमिकता रही है।

साहित्य अकादेमी में दो दिवसीय संगोष्ठी

पिछले अंक के संपादकीय में मैंने 'व्यंग्य यात्रा' की दो दशकीय यात्रा पर व्यंग्य विमर्श की जिस कुल्हाड़ी और सूली पर चढ़ने की तैयारी की जिद का जिक्र किया था उसका खाका तैयार हो गया है। इस अंक से इक्कीसवीं सदी में 'व्यंग्य यात्रा' अपनी दो दशकीय यात्रा पूर्ण कर इक्कीसवें वर्ष में प्रवेश कर रही है। शुभचिंतकों के परामर्श पर इस पड़ाव को रेखांकित करने के लिए 7 और 8 फरवरी 2025 को साहित्य अकादेमी दिल्ली में, 'व्यंग्य का संक्रमण काल' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजन तय हो गया है। हिंदी व्यंग्य को व्यापक आधारभूमि देने के लिए इस आयोजन में विभिन्न पीढ़ियों एवं विधाओं के व्यंग्य चेतना सम्पन्न आलोचकों, रचनाकारों आदि की सहभागिता रहेगी। संगोष्ठी में व्यंग्य के संक्रमण काल, व्यंग्य की स्वीकार्यता, कबीरी धार की कविता, व्यंग्य का आलोचना शास्त्र आदि जैसे व्यंग्य विमर्श के महत्वपूर्ण मुद्दों के अतिरिक्त कार्यशाला तथा व्यंग्य पाठ का आयोजन भी होगा। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध पर चर्चा यदि आवश्यक है तो इक्कीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में उभरी पीढ़ी के प्रखर स्वर की पहचान भी महत्वपूर्ण है।

चने को लेकर अनेक कहावतें, मुहावरे और लोकोक्तियां हैं। जैसे: लोहे के चने चबाना, जेब में नहीं दाने अम्मा चली भुनाने, चने के झाड़ पर चढ़ाना, थोथा चना बाजे घना, नाको चने चबाना, चना चबाकर बाते करना, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, खावे चना तो रहे बना। यदि आप 'व्यंग्य यात्रा' और इसके संपादक को चना मान लें तो ये सारे मुहावरे, कहावतें, और लोकोक्तियां इनपर लागू होते दृष्टिगत होंगे।

'व्यंग्य यात्रा' के प्रयोग के रूप में पांच अंक निकालने का विचार लोहे के चने चबाना जैसा था। चुनौतियां लौहपुरुष बनी खड़ी थीं। मतदान के बाद चुनाव परिणाम की धुकधुकी जैसा पीपल पात सरिस मन डोल रहा था। कार्य पूर्ण होने में संदेह जैसी आशंकाएं डरा रही थीं। भूतकाल की अनुभव संपन्न रात में खड़े अनेक जीवनदायी पेड़ अज्ञात भूत बन खड़े थे। स्वलेखन की हानि ऐसा लोहे का चना था जिसके कारण दांत खट्टे ही नहीं टूट भी सकते थे। प्रयोग रूप में पांच अंक निकालने का संकल्प एक सावधानी थी जिसके चलते बुद्धु जी बेघर न हो, कम-से-कम लौट के घर आ सके। मिशनरी सोच ही लोहे के चने चबाने की ताकत दे सकती थी। मन आश्वस्त था कि 'व्यंग्य यात्रा' यदि विमर्श की जमीन तैयार कर पाई, अन्य विधाओं के आलोचकों तथा लेखको के सहयोग से इसे कुंए का मेंढक बनने से बचा पाई एवं साहित्य की पंगत में बैठने योग्य बनने की शक्ति अर्जित कर पाई तो हिंदी व्यंग्य के लिए 'खावे चना तो रहे बना' इति सिद्धम जैसा होगा।

व्यक्तिगत प्रयासों से निकली लगभग सभी लघु पत्रिकाएं, जेब में नहीं दाने अम्मा चली भुनाने के भाव के साथ आरंभ होती हैं। पत्रिका निकालने का जनून आरंभ में इसके अर्थिक पक्ष की अधिक चिंता नहीं करता है। जैसे लड़की के विवाह की चिंता में शुभचिंतक आश्वासन देते हैं वैसे ही,सब हो जाएगा जैसे आश्वासनों की कमी नहीं रहती है। कुछ कोरे आश्वासन होते हैं और कुछ आश्वासनों के कोरे पन्ने मिलते हैं जिनमें सहयोग की चाहे जितनी राशि लिख भरी जा सकती है। पहले अंक से ही शुभचिंतकों की एक फौज खड़ी हो गई। दूसरे अंक के संपादकीय में मैंने लिखा था, 'व्यंग्यकार कितना भी बचे, वह अपनी ही विसंगतियों का शिकार हो जाता है। आप कितनी ही शहीदी मुद्रा ग्रहण करें यथार्थ आपकी शहादत को आईना दिखा ही देता है। व्यंग्य यात्रा के प्रवेशांक में इसके आर्थिक पक्ष पर मैंनें बहुत ही शहीदी अंदाज में लिख मारा था कि मित्रों, अभी मुझे ही पत्रिका का जीवन पता नहीं तो उसके अजीवन शुल्क का क्या निवेदन करूं! फिलहाल आपके सहयोग से, व्यंग्य के मनोविज्ञान, नेपथ्य, समाजशास्त्र, आलोचना आदि से जुड़े मुद्दों पर, प्रयोगात्मक, पाँच अंक निकालने का विचार है। एक अंक का मूल्य 20 रुपये तथा पांच अंको का सौ रुपये होगा।' इस वाक्य के उत्तर में पत्रिका का जीवन बचाने वाले हितचिंतकों का एक कारवां खड़ा हो गया जो इस मुद्रा में था कि देखें यह व्यंग्यकार कैसे अपने वचन को सही सिद्ध करता है। कैसे वह पाँचवें के बाद छठा अंक नहीं निकालता है। ये शुभचिंतक 'व्यंग्य यात्रा' की छठी के लिए लालायित थे। हिंदी-साहित्य के अधिकांश वरिष्ठ लेखक, मुझ समेत, लघु पत्रिका मुफ्त में पाना अपना अधिकार समझते हैं। पत्रिका न मिलने पर शिकायत करना एवं मिल जाने पर बिना देखे किसी कोने में पटक देना वरिष्ठ महान लेखक का मूल तत्व हैं। 'व्यंग्य यात्रा' को लेखकों का रचनात्मक सहयोग तो मिला ही आर्थिक सहयोग भी मिला। जिन सम्माननीय रचनाकारों को निशुल्क पत्रिका भेजना अपना दायित्व समझा, उन्होने पांच अंकों का चंदा ऐसे दे दिया जैसे तुच्छ सहयोग हो। पारिश्रमिक के चैक भेजे तो किसी ने नहीं भुनाया। नरेंद्र कोहली, सूर्यबाला, नरेंद्र मौर्य, ज्ञान चतुर्वेदी, हरीश नवल, श्रीकांत चौधरी जैसे शुभचिंतकों ने तो हजारों की राशि वाले चेक भेजकर संपादक को ही पारिश्रमिक दे डाला। अपने

परिवार से इतना सहयोग मिला कि आंचल ही न समाए। भिक्षा का कटोरा लबालब भर गया।' जेब में बिना दाने वाली अम्मा को भिक्षा में ढेरों भुने हुए दाने मिल गए। कालांतर में श्रीकांत चौधरी जैसे भामाशाह ने भिक्षा की राशि लाखों में कर दी। भिक्षा के निरंतर मिलतें दानों के कारण, 'व्यंग्य यात्रा' के प्रवेशांक का मूल्य बीस रुपए का था और आज बीस बरस बाद उसके 81वें अंक का मूल्य भी बीस रुपए है। इसी बात पर चुटकी लेते हुए प्रसिद्ध पत्रकार और भाषा विद् राहुल देव ने कहा था कि देश में मंहगाई को रोकने के लिए प्रेम जनमेजय को वित्त मंत्री बना देना चाहिए।

'व्यंग्य यात्रा' की सोच का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। हर क्षेत्र से रचनात्मक सहयोग और प्रशंसा की चाशनी से लिपटे शब्दों की बाढ़ आ गई। कमलेश्वर का लिखना कि मैं तो हमेशा तुम्हारी रचनात्मकता के साथ हूं, नामवर सिंह का कंधे पर हाथ कर कहना कि प्रेम तुम कम से कम व्यंग्य के नाम पर भंडेसी नहीं कर रहे हो। निर्मला जैन, नरेंद्र कोहली, कमल किशोर गोयनका आदि तथा सभी सहयात्रियों का पहले अंक से ही रचनात्मक सहयोग मिलना तथा नामवर सिंह, श्रीलाल शुक्ल, विश्वनाथ त्रिपाठी, नित्यानंद तिवारी आदि द्वारा रचनात्मक सहयोग के आश्वासन मेरी उम्मीद से ज्यादा थे। आज भी ऐसे ही रचनात्मक सहयोग के कारण 'व्यंग्य यात्रा' तीव्र गति से चल रही है और नई ऊंचाइयां छू रही है। आज भी रामदरश मिश्र, विश्वनाथ त्रिपाठी, ममता कलिया, पुष्पा भारती, चित्रा मुद्गल, राहुल देव, आदि जैसों से न केवल रचनात्मक सहयोग मिल रहा है पीठ पर थपकी मिल रही है। सहयात्री और अनुज जब संपादक को झाड़ पर चढ़ाते हैं तब मेरा बस इतना कहना होता है कि श्रेष्ठ रचनाकारों के श्रेष्ठ रचनात्मक सहयोग के कारण ही 'व्यंग्य यात्रा' हिंदी साहित्य में अपनी श्रेष्ठ पगडंडी का निर्माण कर पाई है।

'व्यंग्य यात्रा' आरंभ से खुला मंच रही है। 2004 में इसके लोकापर्ण द्वारा मैंने यह संदेश देने का प्रयत्न किया था कि इस मंच पर सार्थक व्यंग्य और प्रदूषण रहित विमर्श का स्वागत है। चना चबाकर विमर्श करने वालों के लिए चाहे व्यंग्य अछूत माना जाता है पर 'व्यंग्य यात्रा' के लिए कोई विचारधारा अछूत नहीं है। अपनी बात कहें और दूसरों की सुने और तीसरे को तय करने दें वह कितना प्रभावित हुआ। 'व्यंग्य यात्रा' के प्रवेशांक का लोकार्पण मुझ समेत निर्मला जैन, नरेंद्र कोहली, सुधीश पचौरी, विष्णु नागर, दिविक रमेश और गोविंद व्यास, ने किया था।

भिक्षाम् देहि

इस दो दिवसीय संगोष्ठी की सफलता 'व्यंग्य यात्रा' के शुभचिंतकों के तन-मन और धन जैसे सहयोग पर निर्भर करेगी। आप तो जानते ही हैं कि 'व्यंग्य यात्रा' एक भिक्षुक मंच है। विश्वास है कि गिलहरी से लेकर हनुमान तक के इसके शुभचिंतक ही आर्थिक संकट के विशाल सागर-सी चुनौती के लिए सेतु का निर्माण करेंगे। 'व्यंग्य यात्रा' के एक नहीं अनेक भामाशाह हैं।

साहित्य आजतक: 'अपने-अपने मठ...'

पिछले दिनों साहित्य आजतक के आयोजन में पुरस्कार वापिसी जैसे बहिष्कार एवं सहभागिता का द्वंद्वयुद्ध लड़ा गया। कुछ इसलिए पीठ दिए बैठे कि नारी की झाईं पड़ने से अंधे भुजंग-से न हो जाएं। जिन्हें पथभ्रष्ट जाने का भय था वे अपने संगठन की पवित्रता का घूंघट ओढ़ पवित्र नारी- से सात पर्दों में कैद स्वयं को सुरक्षित मानने का भ्रम पाले रहे। जिन्होंने इसे अभिव्यक्ति का मंच माना और जिन्हें अपने आत्मबल पर विश्वास था वे निर्भीक विचरण करते पाए गए। मुझे भी सहभागिता के लिए निमत्रण मिला। मुझ निर्गुटिए का मन द्वंद्व रहित था। विषय था- साहित्य में गुटबाजी। मेरे साथ मंच पर ओम निश्चल और गणेश पांडेय थे। विषय कुश्तिनुमा था। इस विषय पर एक कुशल संचालक की आवश्यकता थी। इसका दर्यित्व निभाया इसे जय प्रकाश पांडेय ने। मुठभेड़ के लिए सवाल एक हल्की-सी मुस्कान के साथ, धीरे-धीरे परोसे। यह मेरा प्रिय विषय है। वर्षों से इससे जूझ रहा हूं। 'व्यंग्य यात्रा' का चौथा अंक, 'साहित्य में माफिया' पर केंद्रित था। कार्यक्रम में मैंने कहा कि लेखन की शैशवावस्था में मुक्तिबोध के इस सवाल से मेरा सामना हुआ- बर्शते तय करो किस ओर हो तुम। जैसे ही आपने तय किया किस ओर हैं उसी समय आपके लिए कुरुक्षेत्र का मैदान तैयार हो जाता है। इस ओर और उस ओर के महाभारत का हिस्सा बनने को अभिशप्त होते हैं। भीष्म, द्रोणाचार्य आदि जैसे द्वंद्व को जीना पड़ता है। अनुशासन के नाम पर, किसी न किसी गढ़ या मठ के हाईकमांड के आदेशों का एक कार्यकर्ता की तरह पालन करने को विवश होता है अन्यथा... मुक्तिबोध का कहा फिर आपके सामने आता है- खतरे उठाने ही होंगे/तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब।' मुक्तिबोध की बात मानी तो नकटे कहलाएंगे।

सन् 1975 'सार्थक' नाम की पत्रिका का संपादन करते हुए इसके दूसरे अंक का संपादकीय मैंने 'बद्ध-प्रतिबद्ध और दलबद्ध' शीर्षक से लिखा था। इसके पक्ष-विपक्ष पर दिग्गजों से लेकर सहयात्रियों तक की ढेरों प्रतिक्रियाएं मिली थीं। मूलभाव यह था कि बद्ध तो हर व्यक्ति होता है। सामाजिक प्रतिबद्धता के आधार पर आपके निर्णय और व्यवहार काम करता है। वैचारिक प्रतिबद्धता से विहीन विचारक लंगरविहीन एवं थैली के बैंगन-सा लुढ़कने को विवश होता है। मेरा मानना है कि किसी दल में कैद प्रतिबद्धता न केवल आपकी वैचारिक स्वतंत्रता और खुली सोच का हनन करती है आपको अनेक अवसरों पर हाईकमांड के आदेश का पालन करने वाला रोबोट कार्यकर्ता बना देती है। एक लेखक किसी दल का सिंपेथाईजर तो हो सकता है, उसे कार्यकर्ता नहीं बनना चाहिए। मेरी सोच कबीरी है और प्रतिबद्धता वंचित के प्रति है।

गुटबाजी तो साहित्य का अभिन्न अंग रहा है। इसके बिना साहित्य बेस्वाद है। सूर सूर तुलसी ससि, उड्गन केसवदास के नारे हर युग में उछले हैं। सबके अपने-अपने सूर और तुलसी है। अपने लंगड़े घोड़े को साहित्य अकादेमी के पुरस्कार के रेसकोर्स में जिताने का धंधा तो...। साठ से लेकर अस्सी के दशक में आमने-सामने अनेक वैचारिक लड़ाइयां लड़ी गई हैं। पर आज के समय में एकल परिवार के कारण जैसे मोहल्ले और पंचायतें गायब हो गई हैं वैसे ही साहित्य में भी संवाद गायब हैं। वैचारिक संगठन गुटबाजी का केंद्र बन गए हैं। किसी भी गुट का कार्यक्रम होता है तो मंच पर वही चेहरे सजते हैं। एक बासीपन का अनुभव होता है। इन आयोजनों मे साहित्य की मुख्यधारा के स्त्रोत का दंभ प्रवाहित होता है। चाहे गुरुदेव कितना कहें कि एकला चलो रे, पर आज के समय में व्यापक सोच के संगठन आवश्यक है। आवश्यक है कि संगठन को गुटबाजी के दंगल से बचाकर रखा जाए।

खैर, हमारा तो अनुरोध है कि आप तो 'व्यंग्य यात्रा' के शुभचिंतक सहयात्री बन साथ चलें और सार्थक व्यंग्य को समृद्ध करें।

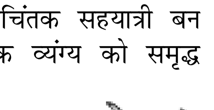

हंस में 'व्यंग्य यात्रा' चर्चा

पिछले 20 वर्षों से व्यक्तिगत प्रयासों से नियमित निकल रही पत्रिकाओं में व्यंग्य यात्रा ने अपनी एक खास जगह बनाई है खासकर एक विधा विशेष में। चूंकि इस विधा पर यदा-कदा चंद कतरें तो दिखाई पड़ती हैं लेकिन संपूर्णता में कोई ऐसा माध्यम नहीं। दूसरी बात, आज जब निकल रही पत्रिकाएं आर्थिक संकट से जूझ रही हों तो ऐसे में इस पत्रिका की कीमत को देखकर हैरानी होती है कि कैसे इसे व्यवस्थित किया जाता होगा। इसके संपादकीय में जनमेजय स्पष्ट करते हैं कि- 'आज व्यंग्य यात्रा की सूली पर चढ़े बीस बरस हो गए हैं। 2004 अक्टूबर में आई 'व्यंग्य यात्रा' पांच अंकों के प्रयोग की बजाय लंबी यात्रा पर निकलती दिखी तो शुभचिंतक ज्ञान चतुर्वेदी ने चिंता प्रकट करते हुए लिखा कि प्रेम के लेखन की नाव रेत में फंस गई है। उसकी नहीं सुनी तो एक साक्षात्कार में बलराम ने सीधे मुझसे सवाल किया कि तुमने 'व्यंग्य यात्रा' की कुल्हाड़ी अपने पैर पर क्यों मारी हुई है? पर मैं तो जैसे नशे की गिरफ्त में था। मैंने सुना-अनसुना किया, पर मेरे लेखन के शुभचिंतकों ने इस अनसुने का बुरा नहीं माना। व्यंग्य यात्रा को सहयोग देना बंद नहीं किया, अपितु मेरी हर मांग की आपूर्ति की'। पत्रिका का यह अंक हरीश नवल पर केंद्रित है। यूं तो हरीश नवल ने अपने लेखन की शुरुआत कहानियों से की थी लेकिन धीरे-धीरे उनको व्यंग्य में रस आने लगा। नरेन्द्र मोहन ने ठीक ही लिखा है- हरीश नवल किसी एक क्षेत्र तक सीमित रहने वाला लेखक नहीं है। वह एक साथ एक क्षेत्र में दूसरे-तीसरे क्षेत्र तक चलने की क्षमता रखता है। इसे आप उसके व्यक्तित्व का बहुआयामी पक्ष भी कह सकते हैं। एक ट्रैक नहीं बल्कि मल्टी ट्रैक यानी एक पांव घर में, दूसरा कॉलेज में, तीसरा रंगमंच पर, चौथा किसी पत्रिका, चैनल रेडियो या टीवी के दफ्तर में, पांचवां यूनिवर्सिटी में, छठा अपने आत्मीय मित्रों के बीच और-और तौबा! इन सबको इतनी सहजता से साधना कि कुछ भी न छूटे और अपना सृजन भी बचा रहे, किसी करतब से कम नहीं है।

सुभाष राय, लखनऊ

प्रेम जनमेजय जी को बहुत बधाई। 'व्यंग्य यात्रा' अपने 21वें वर्ष में प्रवेश कर गयी है, यह कोई साधारण बात नहीं है। किसी भी पत्रिका को चलाने में लोगों का सहयोग तो काम आता है लेकिन एक लेखक को अपनी रचनात्मक ऊर्जा भी खपानी पड़ती है। प्रेम जी का अपना लेखन इससे प्रभावित हुआ होगा, इसमें संदेह नहीं है लेकिन उन्होंने अपनी मेहनत से जो बड़ा मंच तैयार किया है, वह व्यंग्य को रचनात्मक सार्थकता देने में सफलता से काम कर रहा है। इस मंच पर देवशंकर नवीन, सदानंद शाही और राजेन्द्र वर्मा जी को देखना अच्छा लगता है।

यह अंक हरीश नवल पर एकाग्र है। व्यंग्य लेखन, व्यंग्य आलोचना और अनुवाद के क्षेत्र में हरीश जी ने महत्वपूर्ण काम किया है। उनकी रचनाओं का भी अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उन्हें अनेक सम्मान भी मिले हैं लेकिन एक लेखक का मूल्यांकन उसके लिए किसी भी सम्मान से बढ़ाकर है। हरीश की शिकायत है कि व्यंग्य की चर्चा परसाई और जोशी से आगे नहीं बढ़ी है। यह बात सही है लेकिन इसके पीछे व्यंग्यकारों की भीड़ ही है। व्यंग्य आलोचना जिम्मेदारी का काम है। इसे व्यंग्यकारों को ही करना होगा। राजेन्द्र वर्मा जी शायद वृहद मूल्यांकन में लगे हैं। हरीश नवल पर प्रकाशित मूल्यांकनों के शीर्षकों में प्रेम जी ने जो 'नवलीय' और 'नवलता' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है, वे मजेदार हैं। हरीश नवल जी को बहुत बधाई।

हिंदी साहित्य मंडल की फेसबुक वाल

हिन्दी पत्रिकाओं में समकालीन सृजन और सर्जकों के मूल्यांकन के लिए विशेषांक प्रकाशित करने की परिपाटी बड़ी पुरानी और बड़ी समृद्ध है; ऐसे अंक की संरचना भी अब सुव्यख्यायित हो चुकी है और संपादक जानते हैं कि उन्हें क्या करना होगा? लघु पत्रिकाएँ खासकर ऐसे प्रयास करती रहती हैं।

परंतु इस संरचना की जानकारी के बावजूद असल परीक्षा सारी सामग्री एकत्रित करने की होती है। संदर्भ अधीन अंक को देखते हुए सुखद प्रतीति होती है कि पत्रिका संपादक व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय इस अंक में हरीश नवल के रचनात्मक कार्य से जुड़े तमाम पहलुओं और उनके व्यक्तिगत जीवन के वृतांत और परिवार के लोगों के साथ उनके चित्रों सहित लगभग 100 पृष्ठ की ऐसी सटीक जानकारी जुटाने में सफल रहे हैं जिससे नवल जी को न जानने वाले पाठक भी उनकी मुख्य कृतिओं के आस्वाद सहित उनके कार्य की विशिष्ठताओं को जान जाएँगे।

स्वयं प्रेम जनमेजय ने एक अनुसंधान छात्रा के साथ अपने एक पुराने किंतु कालातीत साक्षात्कार को इस सामग्री में स्थान देकर लेखक नवल के कार्य और उसकी महता के प्रति अपनी सुगठित राय शामिल की है। न केवल नवल जी का परिचय और प्रकाशनों की क्रमिक सूचना सम्मिलित की गई है अपितु 5 पृष्ठ का उनका आत्मकथ्य भी सम्मिलित किया गया है। इस प्रस्थानक और परिचायक सामग्री के बाद नवल के साथ पिलकेंद्र अरोड़ा, चंद्रकांता और रणविजय राव के सीधे संवाद के माध्यम से रचनात्मकता के उनके व्यापक फलक में उनकी प्रवृतियों को रेखांकित करने का सफल प्रयास किया गया है।

साक्षात्कार की इस श्रृंखला में एक महफिल भी जुटायी गई जहां एकाधिक

समानधर्मी लेखकों-सह-आलोचकों ने भाई नवल से सामूहिक संवाद किया और उनके लेखन के महत्वपूर्ण पड़ावों के बारे में जानकारी सामने रखी।

आकलन के इस क्रम में इसके बाद कोई तीस अन्य लेखकों के नये-पुराने आलेख संकलित हुए हैं जिनमें कन्हैयालाल नंदन और धर्मवीर भारती जैसे नवल जी की अग्रज पीढ़ी के लेखक-संपादक भी सम्मिलित हैं। यहाँ से नवल जी के लेखन के व्यापक प्रभाव, ग्रह्यता और उनकी लोकप्रियता के बारे में पर्याप्त सूचना मिलती है। उनके लेखन में से उनके अब तक के "सर्वश्रेष्ठ" व्यंग्य संकलन "बागपत के खरबूजे" सहित अन्य कई कृतियों से 15 आलेख उद्धृत करके उनके लेखन की एक बानगी प्रस्तुत की गई है।

संक्षेप में समाहार में कहें तो यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण समकालीन व्यंग्यकार- जिनके लेखन में अभी कोई ब्लॉक नजर नहीं आया और लेखन अधीन एक उपन्यास की चर्चा और अन्य आने वाली पाँच पुस्तकों की सूचना भी अंक में देखने को मिलती है- पर एकाग्र अत्यंत सफल विशेषांक बना है जिसे व्यंग्य लेखकों को ही नहीं अन्य हिन्दी लेखकों और पाठकों को भी पढ़ना चाहिए और अपने पास सहेज कर भी रखना चाहिए।

चंद्रेश्वर, लखनऊ

प्रेम जनमेजय के द्वारा संपादित व्यंग्य यात्रा का अप्रैल-सितंबर, 2024 अंक हाथ आ गया है। प्रेम जी को बधाई। बधाई इसलिए भी कि सुभाष राय जी ने उनके बारे में बहुत खुशनुमा और ममहत्त्वपूर्ण टिप्पणी की है- गागर में सागर की शैली में। गर्व है।

यह अंक हरीश नवल के व्यक्तित्व और साहित्य पर केंद्रित विशेषांक है।कुछ संस्मरणात्मक सामग्री भी है। स्वयं प्रेम जनमेजय का भी एक अच्छा संतुलित संस्मरणात्मक लेख है। स्नेह सुधाजी ने तो अद्‌भुत लिखा है। उनकी बेहतरीन चित्रकारी और कविता भी उनकी अभिव्यक्ति को समृद्ध करती रही। जितना देख पाया हूँ, उसके आधार पर कह सकता हूँ कि यह अंक पाठकों और शोधकर्ताओं के लिए एक बेहद जरूरी अंक बन गया है। हरीश जी को उन्हें चाहने वाले मुझ जैसे प्रशंसकों की ओर से विशेष बधाई।

यह अंक मेरे लिए एक अतिरिक्त सुख भी लेकर आया है। कवि, चिन्तक और आलोचक कौशल किशोर जी का मेरी कविताओं पर लिखा आलेख भी इस अंक में है। यह लेख न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन के द्वारा प्रकाशित मेरी चयनित कविताओं के संग्रह समकाल की आवाज पर केंद्रित है और उनके एक बड़े लेख का उन्हीं के द्वारा संपादित रूप है- पत्रिका के आग्रह पर।

नवभारत टाइम्स, मुंबई
'व्यंग्य यात्रा' का संयुक्तांक

'व्यंग्य यात्रा' को बिना किसी व्यवधान के प्रकाशित होते दो दशक होने जा रहे हैं। सीमित संसाधनों में व्यंग्य जैसी विधा पर केंद्रित किसी लघु पत्रिका व्यंग्य यादी का इतनी लंबी यात्रा कर पाना चकित करता है। यह कार्य बिना पूर्ण समर्पण के संभव ही नहीं है। पत्रिका का यह अंक व्यंग्यकार हरीश नवल पर एकाग्र है। इसमें नवल के प्रतिनिधि व्यंग्य तो हैं ही, उन पर रामदरश मिश्र, नरेंद्र मोहन, कन्हैयालाल नंदन, अशोक चक्रधर, बालस्वरूप राही, गिरीश पंकज, हरिमोहन आदि बीसियों रचनाकारों के मंतव्य भी है। नवल पर सामग्री के अलावा सदानंद शाही, अरविंद तिवारी, जवाहर चौधरी, अतुल चतुर्वेदी और हूबनाथ के व्यंग्य आज के समय की तमाम विद्रूपताओं को सामने रखते हैं। प्रेम जनमेजय की संपादकीय दृष्टि पत्रिका को विश्वसनीय बनाती है और गरिमा प्रदान करती है।

-हरि मृदुल

व्यंग्य यात्रा के भामाशाह
श्रीकांत चौधरी का चंदन

जैसा कि विश्व विदित है, व्यंग्य यात्रा दो दशक के अपने सफर में बहुत से कीर्तिमान रच चुकी है, वरना होता यह है कि बिना व्यावसायिक दृष्टिकोण के अर्थात जोड़-तोड़ से कबाड़े गए विज्ञापन अथवा राजगद्दी की कृपा के, बहुत सारी अच्छी से अच्छी साहित्यिक पत्रिकाएं भी दम तोड़ देती हैं, सफर अधूरा रह जाता है, और खासकर व्यंग्य के इस कटीले राजपथ पर, निर्बाध रूप से चलते रहना, भले ही तुमने त्रैमासिक के स्थान पर कई बार अर्धवार्षिक अंक निकाल कर ही सही, व्यंग्य के पतित पावन उद्देश्य को पूरा किया है और तुम्हारे अपने योगदान के अलावा, इस अनवरत यात्रा में, कई प्रकार के, अविचल अनायास और अयाचित आरोह अवरोह के बावजूद भी, गरिमामय यात्रा जारी रही है, प्रकाशन जारी रहा, जिसमें इसके लेखकों और पाठकों का भी योगदान अविस्मरणीय है।

जब कभी भी इतिहास लिखा जाएगा, खासकर व्यंग्य के परिदृश्य को उसकी उपलब्धियां और अन्वेषण को लेकर, तो मेरी राय में तो सर्वोत्तम शीर्ष स्तर पर व्यंग्य यात्रा का ही नाम होगा, इसलिए नहीं कि मैं इससे आरंभ से जुड़ा हुआ हूं, वो तो मैं और भी कई पत्रिकाओं से उनके आरंभ से जुड़ा रहा हूं, परंतु व्यंग्य यात्रा ने, तुम्हारे सार्थक सहयोग संरक्षण प्रयास और सूझबूझ से, एक से बढ़कर एक मील के पत्थर व्यंग्य के राजपथ पर गहराई से ठोक दिए हैं! इसके बावजूद कि तुम्हारे पैरों में पहिए लगे रहते हैं और दुनिया भर के मंचों पर जाने का तुम्हें चस्का लगा हुआ है!

पर सृजन के क्षेत्र में, वह सब जो चमकता है सोना नहीं है, लागू होता है, कोई भी पत्रिका केवल प्रचार प्रसार के दम पर या मिथ्या दावों और विज्ञापन के दम पर साहित्यिक जगत में अपना महत्व स्थापित नहीं कर सकती, असली सोना ही आखिर कीमत रखता है, वरना सोने जैसी बहुत सी धातुएं हैं!

इस बात पर मेरी पहले भी आपत्ति थी और तुम्हारी जिद्दी अड़ियल रवैया अथवा सोच कि रचना के शीर्षक और लेखक के नाम में अंडरलाइन या तारा जैसा कुछ होना चाहिए, यह कोई फैशन या डेकोरेशन नहीं है शायद चार-पांच साल पहले मैंने यह बात की थी, जिसको तुमने नहीं माना, खैर यह कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है क्योंकि चाय या शरबत सोने चांदी के कप प्लेट/गिलास में पी जाए या चीनी मिट्टी कांच के कप प्लेट में , रहेगा तो चाय और शरबत ही और स्वाद भी वही होगा और उसका मूल स्वभाव भी! इसकी गाथा छोड़ चले हम ताजा अंक के संबंध में कुछ इस तरह कि-